नयी समीक्षा

प्रश्नपत्र - हिंदी आलोचना

कोड - HIND 3012

सेमेस्टर - VI

पाठ्यक्रम - स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी

प्रो. प्रमोद मीणा,

हिंदी विभाग

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी - 845401

स्वातंत्र्योत्तर काल में मार्क्सवादी आलोचना के साथ-साथ नयी समीक्षा का भी विकास

छायावादी काव्य चेतना की प्रतिक्रिया में मार्क्सवादी रचना और आलोचना उत्तरोत्तर विचारधारा की गिरफ्त में आती गई और उस पर कम्यूनिस्ट राजनीति का रंग भी चढ़ता गया

चौथे दशक के अंत तक आते-आते यह अनुभव किया जाने लगा कि छायावाद और प्रगतिवाद, दोनों की सीमाओं से मुक्ति आवश्यक

1943 में अज्ञेय के संपादकत्व में ‘तार सप्तक’ का प्रकाशन

‘तार सप्तक’ की भूमिका में कवियों को किसी पूर्व पथ का राही नहीं, राहों का अन्वेषी कहा जाना, जीवन-जगत के अछूते क्षेत्रों के उद्घाटन पर बल दिया जाना और अनुभूत की सटीक अभिव्यक्ति हेतु नई भाषा, नये बिंबों, नये प्रतीकों और नये उपमानों पर बल

काव्य सृजन में प्रयोग पर बल दिये जाने के कारण यह धारा प्रयोगवादी कहलायी किंतु अज्ञेय को इस शब्द से आपत्ति अत: 1950 से नए भाव बोध वाली कविताओं को नयी कविता कहा गया

अज्ञेय तारसप्तक के वक्तव्य में जीचन की जटिलता, कवि की उलझी संवेदना, साधारणीकरण और संप्रेषण की समस्या जैसी नई बातों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे थे और नई कविताओं के लिए नए आलोचना प्रतिमानों की आवश्यकता पर बल दे रहे थे

नये कवियों का मानना था कि आलोचकों की न तो उनकी कविता के साथ सहानुभूति है और न वे पूर्वाग्रह रहित होकर उनकी कविता की समीक्षा करते हैं अत: नया कवि स्वयं छायावादी कवियों की तर्ज़ पर अपने से और अपने सहधर्मी कवियों से नई कविता की समीक्षा करने का आह्वान करता है

अज्ञेय द्वारा अपनी काव्य कृतियों की भूमिकाओं के अतिरिक्त ‘भवंति’, ‘त्रिशंकु’, ‘आत्मनेपद’ आदि वैचारिक गद्य कृतियों में अपनी काव्य दृष्टि का विवेचन

कविता को अहं के विलय का साधन मानने वाले अज्ञेय ने हिंदी आलोचना को नये मुहावरे दिए :

‘अनुभव की अद्‌वितीयता’

‘वरण की स्वतंत्रता’

‘व्यक्ति स्वातंत्र्य’

‘संप्रेषणीयता’

‘स्वाधीन चेतना’

‘परंपरा और आधुनिकता’

‘सर्जनात्मक क्षमता’

‘जिजीविषा’

‘रचना की स्वायत्तता’

‘प्रयोगशीलता’

‘आत्माभिव्यक्ति‘

‘व्यक्ति की अद्‌वितीयता’

अज्ञेय पर अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद और अंग्रेजी नई समीक्षा का प्रभाव

1954 में ‘नयी कविता’ पत्रिका के साथ ही नयी कविता और नयी समीक्षा की पूर्ण प्रतिष्ठा

नयी समीक्षा के महत्वपूर्ण आलोचक विजयदेव नारायण साही ने नयी कविता को कुत्सित समाजशास्त्रीय व्याख्या से मुक्त करने का आह्वान किया और साथ ही लेखकों से ऐसी भावभूमि पर आने को कहा जहाँ वे अपनी वैयक्तिकता को सुरक्षित रखते हुए सामाजिकता को आत्मसात कर सकें।

अस्तु, नई कविता के दौर में हिंदी आलोचना की दो धाराएँ - आधुनिकतावादी आलोचना या नयी समीक्षा और यथार्थवाद को केंद्र में रखकर चलने वाली मार्क्सवादी आलोचना

नयी समीक्षा के मूल में था - आंग्ल-अमेरीकी न्यू क्रिटिसिज्म जिसके प्रमुख सिद्धांतकार थे - रिपन गार्न, रिचर्ड्स और इलियट, क्लीन्थ ब्रुक्स, एलेन टेट, ब्लैकमेर, जॉन क्रो रेन्सम आदि

प्रो. रिपन गार्न :

- ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय और दार्शनिक व्याख्याएँ अनुचित क्योंकि ये सब साहित्येत्तर प्रतिमान
- रचना वैयक्तिक प्रतिक्रिया और जीवंत अंतर्दृष्टि पर आधृत होनी चाहिए

टी.एस.इलियट और आई.ए. सिचर्ड्स की मान्यता थी कि रचना का मूल्यांकन रचना के रूप में ही किया जाना चाहिए

क्लींथ ब्रुक्स भी कृति के घनिष्ठ पाठ पर जोर देते हैं अर्थात कृति को लेखक की जीवन गाथा या समाज-परिवेश के प्रतिबिंब के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए

रचना मूलत: एक भाषिक अभिव्यक्ति अत: भाषा के सर्जनात्मक तत्वों के विश्लेषण पर जोर

क्लींथ ब्रुक्स भाषागत वैशिष्ट्य को विसंगति (पैराडाक्स) और विडंबना (आइरनी) के रूप में देखते हैं

एलेन टेट तनाव के रूप में

ब्लेकमर टेक्स्चर और स्ट्रक्चर के द्वंद्व के रूप में उत्पन्न जेस्चर (भंगिमा) के रूप में रचना को देखते हैं

हिंदी आलोचकों द्वारा जटिल भावबोध और संश्लिष्ट जटिल काव्य भाषा वाली नयी कविता की समीक्षा हेतु एक सर्वथा भिन्न समीक्षा की आवश्यकता अनुभव किया जाना

हिंदी में आधुनिकतावादियों का नयी समीक्षा में प्रवृत्त होना

अज्ञेय

गिरिजाकुमार माथुर

लक्ष्मीकांत वर्मा

विजयदेव नारायण साह

जगदीश गुप्त

मलयज

रातस्वरूप चतुर्वेदी

अशोक वाजपेयी

रमेशचंद्र शाह

- नयी कविता में आई विसंगति, विडंबना, असहायता, निरुद्देश्यता, एकाकीपन, अजनबीपन, ऊब, संत्रास, कुंठा आदि का विश्लेषण

- नयी कवि के व्यक्तित्व की अद्वितीयता और अनुभूति की प्रमाणिकता पर बल

- वैयक्तिक अस्मिता संकट से गुजरते मनुष्य की मुक्ति पर बल

नयी समीक्षा की प्रमुख कृतियाँ

- अज्ञेय (भवंती, आत्मनेपद, अद्यतन)
- लक्ष्मीकांत वर्मा (नयी कविता के प्रतिमान)
- रामस्वरूप चतुर्वेदी (भाषा और संवेदना, सर्जन और भाषिक संरचना, काव्यधारा के तीन निबंध)
- धर्मवीर भारती (मानव मूल्य और साहित्य)
- गिरिजा कुमार माथुर (नयी कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ)
- जगदीश गुप्त (नयी कविता : स्वरूप और समस्याएँ)
- मलयज (कविता से साक्षात्कार)
- रमेशचंद्र शाह (वागर्थ, सबद निरंतर)
- अशोक वाजपेयी (फिलहाल)

वस्तु और रूप के संदर्भों का विश्लेषण करते हुए भी आंग्ल-अमरीकी आलोचक की जैसे रचना को उसके ऐतिहासिक संदर्भों से काटकर नहीं देखते

- हिंदी के नए समीक्षक काव्य के संदर्भ में भाषा के सर्जनात्मक महत्व पर, संवेदना और शिल्प की अद्‌वितीयता पर विशेष रूप से केंद्रित
- अनुभव की अद्‌वितीयता और भाषा की विशिष्टता पर बल देते हुए कलावादी

नयी समीक्षा का प्रभाव वस्तुवादी मार्क्सवादियों पर भी पड़ना

नामवर सिंह, रामविलास शर्मा और मुक्तिबोध के आलोचना कर्म में यह स्वीकार्य कि रचना, वस्तु और रूप के सम्मिलित सौंदर्य में निहित

- 'कामायनी : एक पुनर्विचार' में मुक्तिबोध कहते हैं कि कलात्मक सौंदर्य ही वह सिंहद्वार जिससे रचना के अंतस में प्रवेश संभव
- कविता के नए प्रतिमान में नामवर सिंह काव्य अनुभूति की जटिलता, तनाव, विसंगति और विडंबना की विस्तृत समीक्षा करते हैं
- निराला की साहित्य साधना में निराला की काव्यभाषा के सर्जनात्मक तत्वों का व्यापक विश्लेषण

निष्कर्ष :

नयी समीक्षा कविता केंद्रित आलोचना जिसमें कविता की स्वायत्तता और सर्जनात्मकता पर विशेष बल

प्रेमचंद को कबीर, तुलसी और भारतेंदु की परंपरा से जोड़कर प्रेमचंद को ही स्थापित नहीं किया अपितु प्रगतिवादी आलोचना को भी हिंदी की जातीय परंपरा के साथ जोड़ना

धन्यवाद

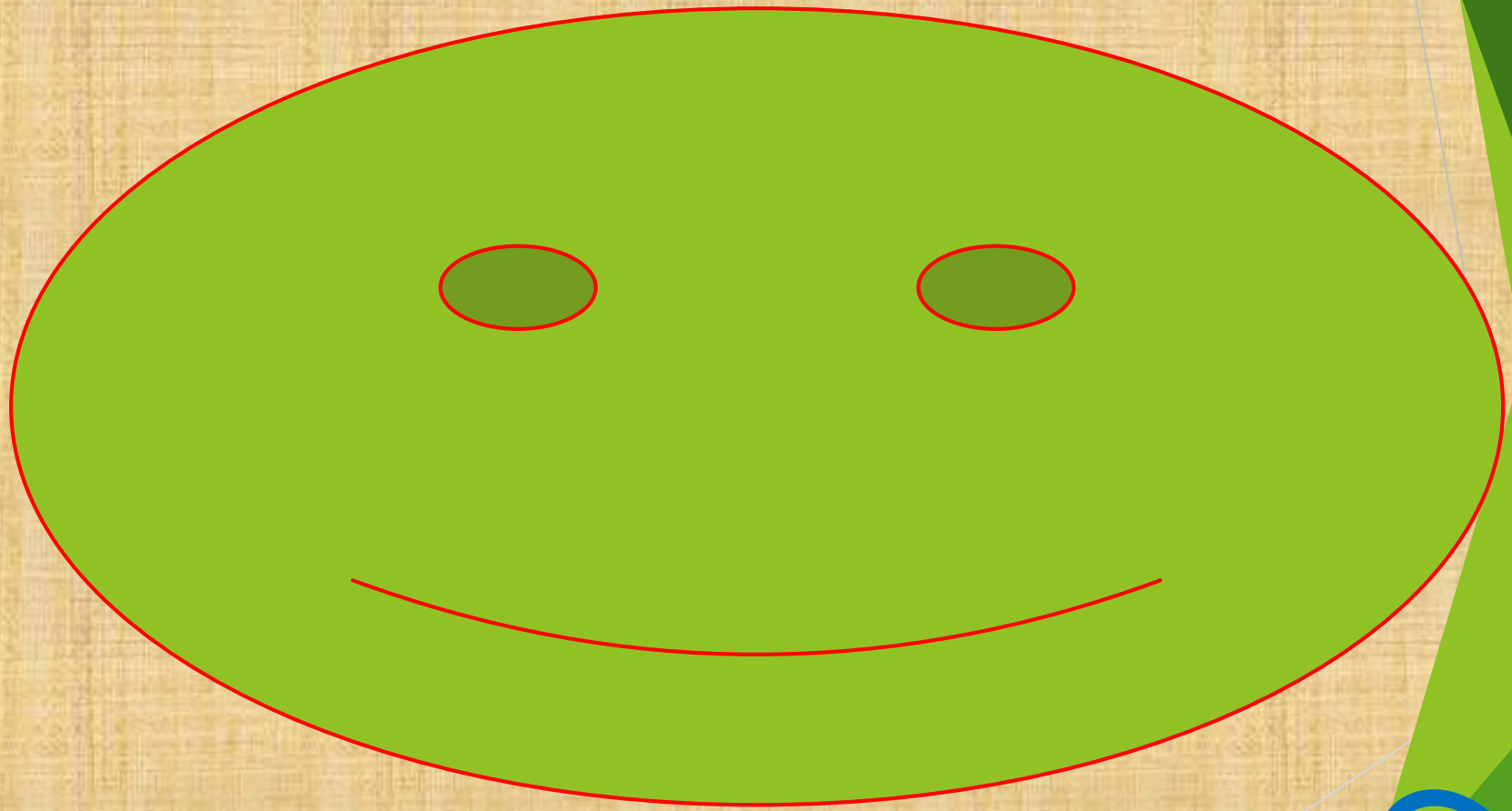

शुक्रिया